

ग्रीष्म ऋतु

सूर्य आग उमल रहा है
प्रचंड तांडव कर रहा है
झुलस रही है धरती सारी
प्यासी हो गयी प्रकृति हमारी
पंछी जानवर हो रहे व्याकुल
जैसे कहीं पता नहीं बिलकुल
पानी ही बस जरूरत हमारी
नदियां तो सूख गयी बेचारी
वर्षा ऋतु तू आजा तत्पर
मैंच कब तू म बरसोगी हमपर !